



Original Article

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित किसान समस्याएँ

प्रो. (डॉ.) सहदेव वर्षारानी निवृत्तीराव

हिन्दी विभाग,

श्री विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठवडगाव, ता. हातकणंगले जि. कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130358

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 292 - 298

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 12 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. (डॉ.) सहदेव वर्षारानी निवृत्तीराव

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786767

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786767>



Creative Commons



सार:

भारतीय समाज की संरचना में किसान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है, जहाँ आज भी बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है। किंतु इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद और औद्योगीकरण के प्रभाव ने किसान के जीवन को गहरे संकट में डाल दिया है। आर्थिक असुरक्षा, कर्ज का बोझ, आत्महत्या, विस्थापन, प्राकृतिक आपदाएँ और बाजार की असमान व्यवस्था ने किसान के अस्तित्व को चुनौती दी है।

हिंदी कविता, जो समाज की संवेदनशील अभिव्यक्ति का माध्यम है, ने इक्कीसवीं सदी में किसान की इन समस्याओं को गंभीरता से उठाया है। समकालीन हिंदी कवियों ने किसान के जीवन, संघर्ष, पीड़ा और प्रतिरोध को अपनी कविताओं में सशक्त रूप से चित्रित किया है। प्रस्तुत शोध-आलेख में इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में किसान विमर्श के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है। समकालीन हिंदी कविता में किसान विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा है। इक्कीसवीं सदी के कवियों ने किसान के जीवन, उसके आर्थिक संकट, विस्थापन, शोषण और अस्तित्व के संकट को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, हरिश्चंद्र पांडे, विजेंद्र, रमाशंकर यादव और आलोक धन्वा जैसे कवियों की कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मुख्य शब्द: किसान विमर्श, हिंदी कविता, वैश्वीकरण, आत्महत्या, शोषण, विस्थापन आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. (डॉ.) सहदेव वर्षारानी निवृत्तीराव. (2026). इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित किसान समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 292 - 298. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786767>

मूल आलेख:

साहित्य समाज का दर्पण होता है और कविता साहित्य की सबसे संवेदनशील विधा है। कविता समाज के वंचित, पीड़ित और शोषित वर्गों की आवाज बनकर सामने

आती है। किसान भारतीय समाज का आधार है, किंतु आधुनिक समय में वही किसान सबसे अधिक संकटग्रस्त वर्ग बन गया है। इक्कीसवीं सदी में किसान अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। उसे अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता, वह



कर्ज के बोझ से दबा हुआ है, प्राकृतिक आपदाओं का सामना करता है और बाजारवादी व्यवस्था में शोषित होता है। इन परिस्थितियों ने किसान के जीवन को अत्यंत कठिन बना दिया है। समकालीन हिंदी कविता ने इन समस्याओं को गंभीरता से उठाया है। कविता में किसान केवल एक पात्र नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विमर्श का केंद्र बन गया है। भारतीय किसान का जीवन सदियों से श्रम, संघर्ष और प्रकृति पर निर्भरता का जीवन रहा है। किंतु इक्कीसवीं सदी में यह संघर्ष और भी जटिल और गंभीर हो गया है। वैश्वीकरण, बाजारवाद, महंगाई, प्राकृतिक संकट और सरकारी नीतियों के प्रभाव ने किसान की आर्थिक स्थिति को अत्यंत कमजोर बना दिया है। समकालीन हिंदी कविता ने इस आर्थिक संकट को गहराई से अनुभव किया है और उसे अपनी संवेदना का केंद्र बनाया है।

भारतीय कृषि की सबसे बड़ी विडंबना है कि जब भी किसान का उत्पाद कृषि उत्पाद बाजार में आता है उसका मूल्य निरंतर गिरने लगता है। मध्यस्थ सस्ती दरों पर किसान का उत्पाद खरीद लेते हैं जिससे कृषि अभी तक घाटे का व्यवसाय बना हुआ है। दुर्भाग्य है कि संबंधित लोग औद्योगिक क्षेत्रों के उत्पादन की दरें लागत, मांग और पूर्ति को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करते हैं किंतु किसान की फसलों तथा उत्पादों का मूल्य या तो सरकार या क्रेता द्वारा निर्धारित किया जाता है उसमें भी तत्काल नष्ट होने वाले उत्पाद की बिक्री के समय किसान असहाय दिखाई देता है। हाल ही ऐसी घटनाएँ ज्ञातव्य हुई हैं जब मध्य प्रदेश में किसानों ने अपनी प्याज और टमाटर सड़कों पर फेंक दिए क्योंकि उनकी इन फसलों की लागत तक नहीं मिल पा रही थी। ऐसी ही स्थिति महाराष्ट्र में हुई जब किसानों ने विरोध स्वरूप अपने दूध के टैंक सड़कों पर बहा दिए। सर्वविदित है कि किसानों का कहीं उत्पाद इतना अच्छा

होने के बावजूद उसका उचित मूल्य न मिलने पर और लागत तक नहीं प्राप्त होने पर किसान उसे फेंकने को मजबूर हो जाता है और कभी कभी उत्पाद इतना कम होता है कि उसे मध्यस्थ सस्ती दरों पर क्रय कर उच्च दरों पर बिक्री कर बीच का मुनाफा ले लेता है और किसान ठगा सा रह जाता है।

कवि व आलोचक राजेश जोशी ने उचित ही लिखा है कि “सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई कोई भी कार्रवाई चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक या साहित्यिक तभी कारगर हो सकती है जब उसमें देश की सामाजिक संरचना और उसके चरित्र की एक वयस्क समझ हो। इस देश का अधिकांश हिस्सा आज भी ग्रामीण है और सबसे बड़ा वर्ग किसान है। इसीलिए परिवर्तन की कोई भी शुरुआत और उसकी सफलता ग्रामीण क्षेत्र के चरित्र के बारे में हमारी समझ और जानकारी पर निर्भर करती है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी देखें तो हर बड़े आंदोलन की सफलता या विफलता के कारण इसमें खोजें जा सकते हैं। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन सबसे उग्र स्वरूप तब ही ग्रहण कर सका जब गांधी ने उसे ग्रामीण क्षेत्रों से उकसाया और उग्र वामपंथी आंदोलन तब विफल हुआ जब वह गाँवों से कटकर शहरों में आ बसा। इस देश के वामपंथी आंदोलन की विफलता का यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कि उसने बार-बार शहरों की तरफ दौड़ लगाने की लाइन अख्तियार की है जबकि इस देश में क्रांति की सारी पहलें किसान आंदोलनों और हथियारबन्द किसान क्रांतियों से हुई।”¹

समकालीन कवियों ने किसान की आर्थिक पीड़ा, उसकी असुरक्षा, कर्ज और उसके अस्तित्व के संकट को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में किसान विमर्श निम्न प्रमुख आयामों में दिखाई देता है-

1. आर्थिक संकट



2. कर्ज और आत्महत्या
3. भूमंडलीकरण और बाजारवाद
4. विस्थापन
5. प्राकृतिक संकट
6. किसान का संघर्ष और प्रतिरोध

आर्थिक संकट:

समकालीन कवियों ने किसान को केवल पीड़ित व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और जागरूक व्यक्ति के रूप में भी चित्रित किया है। इक्कीसवीं सदी में किसान की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक संकट है। किसान उत्पादन करता है, लेकिन उसे उचित मूल्य नहीं मिलता। बिचौलियों और बाजार की व्यवस्था के कारण किसान हमेशा घाटे में रहता है। समकालीन कवि राजेश जोशी ने किसान की इस विडंबना को मार्मिक रूप में व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में किसान की आर्थिक स्थिति और उसकी पीड़ा स्पष्ट दिखाई देती है। कवि बताते हैं कि किसान अपने श्रम से पूरे समाज का पेट भरता है, लेकिन स्वयं भूखा रहता है। यह स्थिति सामाजिक असमानता और शोषण को दर्शाती है। आर्थिक संकट के कारण किसान अपने परिवार का पालन-पोषण करने में असमर्थ हो जाता है। उसकी मेहनत का उचित मूल्य न मिलने से उसका जीवन संघर्षपूर्ण बन जाता है। मंगलेश डबराल की कविताओं में किसान की पीड़ा, विस्थापन और आर्थिक संकट का चित्रण मिलता है। मंगलेश डबराल की कविताएँ समकालीन जीवन की कठोर वास्तविकताओं को सामने लाती हैं। उनकी कविताओं में किसान की आर्थिक असुरक्षा, विस्थापन और सामाजिक उपेक्षा का मार्मिक चित्रण मिलता है।

"वे खेत जो हमारे थे

*अब बाजार की चीज हो गए हैं।"*²

इस पंक्ति में कवि ने भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव को दर्शाया है। खेत जो किसान की पहचान और जीवन का आधार थे, अब बाजार की वस्तु बन गए हैं। यहाँ 'खेत' किसान की अस्मिता का प्रतीक है और उसका बाजार की वस्तु बन जाना किसान के अस्तित्व के संकट को दर्शाता है। मंगलेश डबराल की कविताएँ यह स्पष्ट करती हैं कि आधुनिक व्यवस्था में किसान अपनी जमीन और पहचान दोनों खो रहा है। मंगलेश डबराल अपनी कविताओं में किसान की आर्थिक असुरक्षा और उसके संघर्ष को उजागर करते हैं। उनकी कविताएँ आधुनिक व्यवस्था की विसंगतियों को सामने लाती हैं। उनकी कविताओं में किसान एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाई देता है, जो लगातार मेहनत करता है, लेकिन आर्थिक रूप से सुरक्षित नहीं हो पाता।

किसान समाज के लिए अन्न का उत्पादन करता है। वह पूरे वर्ष मेहनत करता है, लेकिन उसे उसके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता। यह स्थिति आर्थिक विडंबना का सबसे बड़ा उदाहरण है। समकालीन हिंदी के प्रमुख कवि राजेश जोशी ने किसान की इस स्थिति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में किसान का श्रम और उसकी उपेक्षा स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी कविताएँ यह संकेत देती हैं कि,

*"जो धरती को जीवन देता है, वही जीवन के लिए संघर्ष करता है।"*³

यह पंक्ति किसान के आर्थिक शोषण और सामाजिक उपेक्षा का प्रतीक है। किसान पूरे समाज के लिए भोजन तैयार करता है, लेकिन स्वयं आर्थिक संकट में जीता है। यह स्थिति आधुनिक समाज की असमानता और अन्याय को दर्शाती है।



कर्ज और किसान आत्महत्या:

इक्कीसवीं सदी में किसान आत्महत्या एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है। कर्ज के बोझ और आर्थिक संकट के कारण हजारों किसान आत्महत्या करने को मजबूर हुए हैं। समकालीन हिंदी कविता में इस समस्या को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। कवियों ने किसान की मानसिक स्थिति, उसकी निराशा और उसके दर्द को गहराई से व्यक्त किया है। कवि राजेश जोशी की कविताओं में किसान की असहायता और उसकी पीड़ा का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी कविताएँ किसान के जीवन की कठोर सच्चाइयों को सामने लाती हैं। कविता में किसान की आत्महत्या केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं है, बल्कि यह समाज की असफलता का प्रतीक है। राजेश जोशी की कविताएँ सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में किसान की आर्थिक पीड़ा और उसकी विडंबना का सशक्त चित्रण मिलता है।

*"वे जो अन्न उगाते हैं वे सबसे अधिक भूखे होते हैं।"*⁴

यह पंक्ति किसान के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना को व्यक्त करती है। जो व्यक्ति पूरे समाज के लिए भोजन का उत्पादन करता है, वही स्वयं भूखा रहता है। यह स्थिति सामाजिक और आर्थिक असमानता को दर्शाती है। राजेश जोशी की कविताएँ किसान के शोषण और उसकी असहायता को उजागर करती हैं। उनकी कविता सामाजिक चेतना को जागृत करने का कार्य करती है। आर्थिक संकट के कारण किसान को अक्सर कर्ज लेना पड़ता है। वह अपनी खेती के लिए बैंक या साहूकार से ऋण लेता है। यदि फसल खराब हो जाती है या उचित मूल्य नहीं मिलता, तो वह कर्ज चुकाने में असमर्थ हो जाता है। यह स्थिति किसान के लिए अत्यंत पीड़ादायक होती है। समकालीन हिंदी कविता में कर्जग्रस्त किसान की पीड़ा का मार्मिक चित्रण मिलता है। कवि किसान

की मानसिक स्थिति, उसकी चिंता और उसकी असहायता को गहराई से प्रस्तुत करते हैं। कर्ज केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह किसान के आत्मसम्मान और उसके अस्तित्व से भी जुड़ा हुआ है।

“तो एक सबसे बड़ा विकल्प खुला है

आत्महत्या का !

कि तुमसे पहले भी चुना है यह विकल्प तुम्हारे भाई –
बन्दों ने

लेकिन इतना जान लो

मृत्यु सिर्फ मर गए आदमी के दुःख और तकलीफें दूर
करती है

लेकिन बचे हुआओं की तकलीफों में हो जाता है

थोड़ा इजाफा और!"⁵

हरिश्चंद्र पाण्डेय की एक कविता में किसानों की इस नियति पर जो टिप्पणी दिखाई पड़ती है वह विचारणीय है-

“क्या नर्क से भी बदतर हो गई थी उसकी खेती

वे क्यों करते आत्महत्या

जीवन उनके लिए उसी तरह काम्य था

जिस तरह मुमुक्षुओं के लिए मोक्ष

लोकाचार उसमें नदियों की तरह प्रवाहमान सदानीरा

उन्हीं की हलों के फाल से

संस्कृति की लकीरें खिंची चली आई थीं

उनका आत्म तो कपास की तरह उज्जर था

वे क्यों करते आत्महत्या!"⁶

भूमंडलीकरण और बाजारवाद का प्रभाव:

भूमंडलीकरण ने कृषि को भी बाजार से जोड़ दिया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने कृषि क्षेत्र में प्रवेश किया है, जिससे किसान की स्थिति और अधिक कमजोर हो गई है। महंगे बीज,



उर्वरक और मशीनों के कारण किसान की लागत बढ़ गई है, जबकि उसकी आय में वृद्धि नहीं हुई है। समकालीन कवि केदारनाथ सिंह और मंगलेश डबराल ने अपनी कविताओं में इस समस्या को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। कविता में किसान को बाजारवादी व्यवस्था का शिकार बताया गया है, जहाँ उसका शोषण किया जाता है। समकालीन हिंदी कवि विजेंद्र की कविताओं में किसान के संघर्ष और उसकी पीड़ा का यथार्थ चित्रण मिलता है।

"किसान अपने खून से सींचता है खेत

फिर भी उसका जीवन सूखा रहता है।"

इस पंक्ति में कवि ने किसान के कठोर श्रम और उसकी आर्थिक पीड़ा को व्यक्त किया है। यहाँ "खून से सींचना" किसान के कठिन परिश्रम का प्रतीक है, जबकि "सूखा जीवन" उसकी आर्थिक असुरक्षा का प्रतीक है। इक्कीसवीं सदी में बाजारवादी व्यवस्था ने किसान को आर्थिक रूप से कमजोर बना दिया है। बाजार में कीमतों का निर्धारण व्यापारी और कंपनियाँ करती हैं, किसान नहीं। इस स्थिति में किसान केवल एक उत्पादक बनकर रह गया है, जबकि लाभ अन्य लोग उठाते हैं। समकालीन हिंदी कविता में इस शोषणकारी व्यवस्था की तीखी आलोचना की गई है। कवियों ने किसान की पीड़ा को समाज के सामने लाकर सामाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है।

विस्थापन और किसान:

औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण किसानों की जमीन अधिग्रहित की जा रही है। इससे किसान अपनी जमीन और पहचान दोनों खो रहा है। समकालीन हिंदी कविता में विस्थापन एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। कवियों ने किसान के जमीन से जुड़े भावनात्मक संबंध को व्यक्त किया है। किसान

के लिए जमीन केवल उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि उसकी पहचान और अस्तित्व का आधार है। आलोक धन्वा की कविताएँ सामाजिक और राजनीतिक चेतना से परिपूर्ण हैं। उनकी कविताओं में किसान और श्रमिक वर्ग के संघर्ष का चित्रण मिलता है।

"जमीन से बेदखल आदमी

अपनी पहचान भी खो देता है।"

इस पंक्ति में कवि ने किसान और जमीन के गहरे संबंध को व्यक्त किया है। जमीन किसान के लिए केवल उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि उसकी पहचान और अस्तित्व का आधार है। जब किसान अपनी जमीन खो देता है, तो वह अपनी पहचान भी खो देता है। आलोक धन्वा की कविताएँ किसान के विस्थापन और उसके अस्तित्व के संकट को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

"मैं किसान हूँ

आसमान में धान बो रहा हूँ

कुछ लोग कह रहे हैं

कि पगले ! आसमान में धान नहीं जमा करता

मैं कहता हूँ पगले!

अगर ज़मीन पर भगवान जम सकता है

तो आसमान में धान भी जम सकता है

और अब तो दोनों में से कोई एक होकर रहेगा

या तो ज़मीन से भगवान उखड़ेगा

या आसमान में धान जमेगा।"

प्राकृतिक संकट और किसान:

किसान का जीवन पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर है। सूखा, बाढ़, और जलवायु परिवर्तन के कारण किसान की फसल बर्बाद हो जाती है। समकालीन कवियों ने किसान और प्रकृति



के इस संबंध को अपनी कविताओं में प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। कवि केदारनाथ सिंह की कविताओं में किसान और प्रकृति का गहरा संबंध दिखाई देता है। उनकी कविता 'धान' में किसान के जीवन का यथार्थ चित्रण है। केदारनाथ सिंह समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवि हैं। उनकी कविताओं में किसान और प्रकृति का गहरा संबंध दिखाई देता है। वे ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और किसान की संवेदना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता 'धान' में किसान और फसल के बीच गहरे भावनात्मक संबंध का चित्रण मिलता है।

"धान उगेंगे कि प्राण उगेंगे उगेंगे हमारे खेत में।"¹⁰

इस पंक्ति में 'धान' केवल एक फसल नहीं है, बल्कि किसान के जीवन और अस्तित्व का प्रतीक है। धान का उगना किसान के जीवन, आशा और भविष्य का संकेत है। यहाँ कवि ने धान को "प्राण" के रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किसान का जीवन उसकी फसल पर निर्भर है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में किसान और प्रकृति के बीच गहरा आत्मीय संबंध दिखाई देता है। उनकी कविता किसान के आर्थिक और भावनात्मक जीवन को उजागर करती है।

किसान का संघर्ष और प्रतिरोध:

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में किसान केवल पीड़ित नहीं है, बल्कि संघर्षशील भी है। कविताओं में किसान अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। वह अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाता है। कविता में किसान की यह छवि उसे एक जागरूक और संघर्षशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है। राजेश जोशी की कविताएँ सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में किसान के जीवन की कठिनाइयाँ दिखाई देती हैं। आलोक

धन्वा की कविताओं में किसान और श्रमिक वर्ग के संघर्ष को चित्रित किया गया है। कवियों ने खेत, मिट्टी, हल, बीज, वर्षा आदि प्रतीकों के माध्यम से किसान के जीवन को चित्रित किया है। आज किसान आंदोलन, कृषि कानून, जलवायु परिवर्तन आदि मुद्दों ने किसान विमर्श को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। समकालीन हिंदी कविता इन मुद्दों को गंभीरता से उठाती है और समाज को जागरूक करने का कार्य करती है।

“देश के बारे में लिखे गए हजारों निबन्धों में लिखा

गया

पहला अमर वाक्य एक बार फिर लिखता हूँ

भारत एक कृषि प्रधान देश है

दुबारा उसे पढ़ने को जैसे ही आँखें झुकाता हूँ

तो लिखा हुआ पाता हूँ

कि पिछले कुछ बरसों में डेढ़ लाख से अधिक

किसानों ने

आत्महत्या की है इस देश में

भयभीत होकर कागज पर से अपनी आँखें उठाता हूँ

तो मुस्कुराती हुई दिखती है हमारी सरकार

कोई शर्म नहीं किसी की आँख में।”¹¹

इसीतरह आलोक धन्वा अपनी कविता 'गोली दागो पोस्टर' में लिखते हैं-

“आदमीयत को जीवित रखने के लिए अगर

एक दरोगा को गोली दागने का अधिकार है

तो मुझे क्यों नहीं ?

जिस ज़मीन पर

मैं अभी बैठकर लिख रहा हूँ

जिस ज़मीन पर मैं चलता हूँ

जिस ज़मीन को मैं जोतता हूँ

जिस ज़मीन में बीज बोता हूँ और



जिस ज़मीन से अन्न निकालकर मैं
 गोदामों तक ढोता हूँ
 उस ज़मीन के लिए गोली दागने का अधिकार
 मुझे है या उन दोगले ज़मींदारों को जो पूरे देश को
 सूदखोर का कुत्ता बना देना चाहते हैं
 यह कविता नहीं है
 यह गोली दागने की समझ है
 जो तमाम क्रलम चलानेवालों को
 तमाम हल चलानेवालों से मिल रही है।”¹²

निष्कर्ष:

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में किसान विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा है। समकालीन कवियों ने किसान के जीवन की समस्याओं, संघर्ष और पीड़ा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कविता में किसान केवल पीड़ित व्यक्ति नहीं है, बल्कि संघर्षशील और जागरूक व्यक्ति के रूप में सामने आता है। हिंदी कविता ने किसान की आवाज बनकर समाज को उसकी समस्याओं के प्रति जागरूक किया है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में किसान विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय है। केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, आलोक धन्वा और विजेंद्र जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में किसान के जीवन, उसके संघर्ष और उसकी पीड़ा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इन कविताओं में किसान केवल एक पात्र नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विमर्श का केंद्र है। समकालीन हिंदी कविता किसान की आवाज बनकर सामने आती है और समाज को उसकी समस्याओं के प्रति जागरूक करती है। समकालीन हिंदी कविता में किसान का आर्थिक संकट एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है। कवियों ने किसान की आर्थिक

पीड़ा, उसके संघर्ष और उसके अस्तित्व के संकट को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवाद के साथ चित्रित किया है। किसान का आर्थिक संकट केवल किसान की समस्या नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज और राष्ट्र की समस्या है। इस प्रकार, समकालीन हिंदी कविता में किसान का आर्थिक संकट एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय है।

संदर्भ सूची:

1. राजेश जोशी, एक कवि की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं2004-., पृ.171 -सं. .
2. मंगलेश डबराल – हम जो देखते हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2024, पृ.24
3. राजेश जोशी – विकल, एक दिन बोलेंगे पेड़ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 30
4. राजेश जोशी – विकल, एक दिन बोलेंगे पेड़ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 30
5. केदारनाथ सिंह – प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2024
6. हरिश्चंद्र पाण्डेय – कुछ भी मिथ्या नहीं हैं, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 81
7. विजेंद्र- मेरी एक और धरती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. रमाशंकर यादव ‘विद्रोही’- नई खेती
9. आलोक धन्वा- गोली दागो पोस्टर
10. केदारनाथ सिंह – प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2024
11. राजेश जोशी - किसान आत्महत्या को अब कहाँ जोंडू
12. आलोक धन्वा- गोली दागो पोस्टर, भारतीय साहित्य